

22. कृत्त्रदिशामुपरा उदायन् RV. 10, 27, 28. धन्वं च यत्कृत्त्रं च कति स्विता वि योत्रेना 86, 20. वृत्तेव तद्वत्प्रत्युनभुवत्यस्तोमकृत्त्राय यद्वर्धन्तं स्यात्कृत्त्रं स्यात् Ait. Br. 5, 16. यत्कृत्त्राणि Çat. Br. 12, 2, 3, 12, v. 1. — 2) proparox. Pflug Un. 3, 108.

कृत्त्र (wie eben) n. das Zerschneiden, Abschneiden: कर्मनिबन्धकृत्त्रनम् Bhāg. P. 6, 2, 46. कृत्त्रनं चावयवशः 3, 30, 28. कृत्त्रनं नखकेशानाम् KAR-MALOKANA im ÇKDr. तत्तुकृत्त्रनं das Abschneiden der Nachkommenschaft Bhāg. P. 6, 3, 43.

कृत्त्रविचक्षणं und कृत्त्रविचक्षणं (कृत्त्र, 2. pl. und कृत्त्रि, 2. sg. imperat. von 1. कृत्त्र + विचक्षणं) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2, 1, 72.

कृप् f. (nur instr.) schönes Aussehen, Schönheit; Schein Nir. 6, 8. निर्यत्युत्वे स्वर्धितिः शुचिर्गत्स्वयो कृपा तत्त्वाद् रोचमानः RV. 7, 3, 9. सूरौ न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचते 6, 2, 6, 13, 5. उडं तिष्ठ स्वधर् स्तवानो देव्या कृपा 8, 23, 5. स न ऊर्जामुपभृत्पया कृपा न रूयति 1, 128, 2. 127, 1. दर्विभुतत्या रुचा परिष्ठेभृत्पया कृपा 9, 64, 28. यं कृपा सूर्यस्त इत् 8, 23, 8. VS. 4, 25.

कृप m. n. pr. eines Mannes: शग्धि यथा रुग्मं श्यावकं कृपमिन्द्र प्रावः स्वर्णम् RV. 8, 3, 12. यद्वा रुमे रुग्मि श्यावके कृप रुद्रं मादयेसे सचा 4, 2. कृप m. und कृपी f. Kinder Çaradvant's (nach dem HARIV. und VP. entferntere Nachkommen desselben), die Schwester — die Gemahlin Droṇa's, der Bruder — der Vater Aṣvatthāman's. Çāntanu gab ihnen jene Namen, weil er Mitleid (कृपा) gegen sie geübt hatte. Mbh. p. 3. MBh. 1, 2436. 2712. 5071. fgg. 5114. 3, 316. 5, 5274. 6, 1596. Anū. 11, 8. BHAG. 1, 8. HARIV. 1787. VP. 454. Bhāg. P. 1, 7, 45. 8, 13, 15. 9, 21, 36. LIA. 1, 693. कृपीपति ein Bein. Droṇa's Çādam. im ÇKDr. कृपीपुत्र (Bhūripur. im ÇKDr.) und कृपीसुत (TRIK. 2, 8, 19) Beinn. von Aṣvatthāman. Nach der DHAR. im ÇKDr. ist कृप = व्यास; nach HARIV. LANGL. II, 137 ein Sohn Kṛṣṇa's (Calc. Ausg. तुप).

कृपाṇḍenom. von कृपा s. u. कृपाय.

1. कृपा (von कृप्) 1) adj. P. 8, 2, 18, Vārtt. 1. f. आ und ई (dieses nicht zu belegen) gaṇa वेद्धादि zu P. 4, 1, 45. in comp. mit कृत् u. s. w. gaṇa श्रेयादि zu P. 2, 1, 39. Accent eines comp. von कृपा mit einem partic. praet. pass. gaṇa सुखादि zu P. 6, 2, 170. a) dem es weinerlich zu Muthe ist oder wobei es Jmd weinerlich zu Muthe ist, miser, bejammerenswerth, arm, elend (auch in verächtlichem Sinne), jämmerlich, weinerlich Çat. Br. 11, 4, 2, 5. 9. 14, 6, 8, 10. आदितः कृषवृत्तिर्यः कृपा न स राघव । महात्मा व्यसनं प्राप्नो दीनः कृपा उच्यते ॥ R. 4, 21, 19. प्रसीद मम भक्तस्य दीनस्य कृपास्य च MBh. 13, 921. 6693. 2, 1362. fg. 3, 16186. N. 12, 24. 19, 5. BHAG. 2, 49. BRĀHMAN. 3, 12. R. 2, 32, 27. 39, 19. 3, 23, 8. 5, 26, 12. 80, 6. 6, 7, 45. DAÇ. 2, 34. स महात्मा व्यसं कृपाः PAÑKAT. 24, 4. HIT. I, 127. AMAR. 61. BHAG. P. 1, 6, 9. 8, 2, 25. कामार्ता हि प्रकृतिकृपाणाश्चेतनाचेतनेषु jammern vor vernünftigen und unvernünftigen Wesen Megh. 5. गच्छन्ति कृपां दशाम् MBh. 133, 9. त्वं धीरो भव वित्तवत्सु कृपां वृत्तिं वृद्धा मा कृथाः BHART. 2, 41. महान्कृपाणा ऽपि वा (मार्गः) PAÑKAT. III, 233. नाहं सुकृपाणे मार्गे — चोर्यम् MBh. 1, 4611. सत्कृतो ऽसत्कृतो वापि यो ऽन्यं कृपाचक्षुषा । उपैति वृत्तिं कामात्मा स श्रुनो वर्तते पयि ॥ 4612. आश्रावणम् Çat. Br. 11, 4, 2, 5. 9. कृपा वाचः MBh. 4, 807. aus Jammer, Weinen entstanden: आस्त्रेयोश्च वास्त्रेयोश्च तरणाः कृपाणाश्च पाः (घ्रापः)

AV. 11, 8, 28. कृपाṇḍm. adv. weinerlich, kläglich DRAUP. 3, 12. MBh. 14, 1582. DAÇ. 2, 45. PAÑKAT. III, 183. कृपा = कुत्सित Mbh. p. 44. — b) geizig AK. 3, 1, 48. 3, 4, 25, 174. TRIK. 3, 1, 12. H. 367. Mbh. p. 44. दातारं कृपाः (निन्दति) PAÑKAT. I, 466. दाता लघुरपि सेव्यो भवति न कृपा मोक्षानपि समृद्धा II, 71. 142. I, 56. III, 243. HIT. I, 152. 153. 167. Dieselbe Bed. hat das comp. प्रदानकृपा im Geben erbärmlich MBh. 13, 6692. — 2) m. Wurm Mbh. p. 44. — Vgl. कृपाय.

2. कृपा (wie eben) n. Jammer: कुत्सय शुद्धं कृपाणे परादात् RV. 10, 99, 9. सखा ह ज्ञाया कृपाणे ह डक्षिता ज्योतिर्ह पुत्रः ÇĀNEN. Çr. 15, 17, 12. डक्षिता कृपाणे धर्मम् M. 4, 185. किं न्वतः कृपाणे भूयो यत् u. s. w. MBh. 2, 2348. किमेभिः कृपाणैर्भूयः पापत्रैरपि ते कृतेः R. 2, 38, 10. सकृपाṇḍm. jämmerlich, kläglich: वक्तुं न वदमुत्सहे सकृपाणे देहीति दीनं वचः ÇĀNEN. 4, 4.

कृपाणाशिशिन् (कृ + का) adj. viell. sehnsüchtig blickend oder Verlangen ausdrückend: चारुः कृपाणाशी कामः TS. 3, 4, 3, 3.

कृपाणत्व (von 1. कृपा) n. Jämmerlichkeit, Erbärmlichkeit MBh. 2, 1361.

कृपाणाय (wie eben), कृपाणायते sich elend fühlen gaṇa सुखादि zu P. 3, 1, 18.

कृपाणिन् (von 2. कृपा) adj. der Jammer hat gaṇa सुखादि zu P. 5, 2, 131.

कृपाय (von 1. कृपा), कृपायति begehren, wünschen, erleben: तत्तद्विषये द्ये यथा यथा कृपायति RV. 8, 39, 4. Auch eine Form ohne य im med.: इमेनैषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृपाणस्त रत्नम् 10, 74, 3. Nach NAIGH. 3, 14 ist कृपायति ein अर्चतिकर्मन्.

कृपायै (von कृपाय) adj. = स्तोत्र NAIGH. 3, 16.

कृपनीक (कृप् + नीक) adj. im Scheine heimisch, von Agni: यमासा कृपनीके भासाकेतुं वर्धयति RV. 10, 20, 3.

कृपा (Nebenform von कृपाय), कृपायति trauern, jammern: हिमेव पर्णा मुपिता वनानि वृक्षपतितानाकृपहलो गाः wie die Bäume über das von der Kälte ihnen geraubte Laub, so trauerte Vala über die von Brh. entrissenen Rinder RV. 10, 68, 10. कृपाय वृतः कृपायन्दीयित् 98, 7. 8, 46, 16. Mitleid haben: पुंसः कृपातो भद्रे सर्वात्मा प्रीयते हरिः Bhāg. P. 8, 7, 40. कृपायति schwach sein DHITUP. 33, 17. — Vgl. कृप्.

कृपा (von कृप्) f. gaṇa भिदादि zu P. 3, 3, 104. 8, 2, 18, Vārtt. 1. Sch. 1) Mitgefühl, Mitleid AK. 1, 1, 3, 18. H. 369. Mbh. p. 3. कृपाविष्टः MBh. 2, 333. उवाच भीमं कल्याणी कृपान्वितमिदं वचः BRĀHMAN. 1, 5. कृपा MBh. 2, 2294. VIG. 9, 1. HIT. 18, 8. जगतः कृपा aus Mitgefühl für die Welt SUND. 3, 2. कृपां कारु Mitgefühl —, Mitleid haben DRAUP. 9, 22. VID. 266. कृपां कृपायया मयि N. 17, 39. R. 4, 30, 5. 5, 36, 23. 48. कृपा ते मयि मा च भूत् Vid. 203. सकृपम् adv. mitleidig ÇĀNEN. 4, 19. — 2) N. pr. eines Flusses (v. l. रूप) VP. 183, N. 80.

कृपाण 1) m. P. 8, 2, 18, Vārtt. 1. Sch. Schwert AK. 2, 8, 2, 57. H. 782. an. 3, 200. Mbh. p. 44. VID. 78. 261. PRAB. 83, 12. — 2) f. ई Scheere oder Dolch AK. 2, 10, 34. H. 911. H. an. Mbh. Messer H. an. Mbh. — Vgl. कल्प caus. 10.

कृपाणक (von कृपाण) 1) m. Schwert Hā. 133. — 2) f. कृपाणिका Dolch, Messer H. 784.